①

श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

सा विद्या या विमुक्तये

C/o. शाह गोविन्दजी वीरम फेक्टरी कम्पाउन्ड, मोंढा रोड, औरंगाबाद (महा.) ४३१ ००१

सम्यग्ज्ञान परिचय

Answer Sheet

◆◆◆ अभ्यासक्रम जवाब पत्र ◆◆◆

2020-21

ऐनरोलमेन्ट नंबर   अभ्यास - 1   शहर

विद्यार्थी का नाम

प्रश्न-१ रिक्त स्थान

(१)	महसेन
(२)	शुद्धसम्यकत्व
(३)	श्री वज्रपंजर
(४)	पंचास्तिकाय
(५)	उसन्ना
(६)	अदृश्य
(७)	मोती की माला
(८)	आठ नवकार
(९)	"धांगु"
(१०)	जेण्हा
(११)	मध्य (तिच्र्छा)
(१२)	उत्तरगुण
(१३)	नामकर्म
(१४)	सर्वसाधुओं की
(१५)	तीर्थ
(१६)	उपयोग पूर्वक
(१७)	विजय
(१८)	वज्र के किले
(१९)	कर्मबंध
(२०)	वादविजेता

प्रश्न-२ एक ही शब्द में

(१)	सोमिल
(२)	स्थापना
(३)	कर्म-विपाक
(४)	विरति के
(५)	स्तोत्रों का
(६)	तिर्च्छलोक
(७)	स्थितीबंध
(८)	गृभिका नगर
(९)	विवेक
(१०)	गोब्बर गाव
(११)	शोक्यसमान
(१२)	योग
(१३)	कांक्षा
(१४)	वैताढ्यपर्वत पर
(१५)	आत्मशुद्धि
(५)	किलेरूप
(६)	शोभित
(७)	सर्वज्ञ
(८)	व्रत
(९)	दो पादुका रूप
(१०)	विपाक
(११)	श्रेणियाँ
(१२)	पताका समान
(१३)	हथियार रूप
(१४)	प्रदेश
(१५)	भाई के समान
(१६)	जानना
(१७)	चलु
(१८)	सुत्र
(१९)	कूट (शिखर)
(२०)	यह

प्रश्न-३ शब्दार्थ

(१)	ममता
(२)	ढक्कन
(३)	श्रमणोपासक
(४)	अंतराय

प्रश्न-४ जोडियाँ लगाओ

(१)	७	(६)	५
(२)	८	(७)	४
(३)	९	(८)	३
(४)	६	(९)	२
(५)	१०	(१०)	१

प्रश्न-५ संख्या में जवाब

(१)	९५८
(२)	५०
(३)	१८०० योजन
(४)	१८
(५)	८
(६)	१०१
(७)	५००
(८)	१०
(९)	१२५ योजन
(१०)	४५लाख योजन

प्रश्न-६ ✓ या ×		प्रश्न-७ यह वाक्य किस पृष्ठ पर	
(१)	✓	(१)	६
(२)	✗	(२)	22
(३)	✓	(३)	2
(४)	✓	(४)	१०
(५)	×	(५)	23
(६)	×	(६)	११
(७)	✓	(७)	१८
(८)	×	(८)	७
(९)	×	(९)	१२
(१०)	✓	(१०)	९

प्रश्न-१ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-२ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-३ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-४ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-५ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-६ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-७ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-८ मिले हुए गुण	=	कुल गुण

रीमार्क ______________________ जांचनेवाले की सही ______________________

प्रश्न - ८

१. सुंठ, मेथी के मोदक स्वभावसे वात दूर करते है। उसी तरह बंधा हुआ कर्म आत्मा के गुणों को ढकता है। उस कर्म के स्वभाव को प्रकृतिबंध कहते हैं। मोदक का अच्छा रहने का काल भी अलग होता है जैसे चुरमे का मोदक एक दिन अच्छा रहता है, बुंदी का मोदक आठ दिन अच्छा रहता है, उसी तरह कर्म आत्मा के साथ कितने समय तक रहेगा कर्म का आत्मा के साथ रहने का काल (समय) स्थिती बंध है। कर्मबंध के समय रस में मंदता तीव्रतमता देखने मिलती है जिसे संबंध कहते हैं। मोदक के आकार और वजन भिन्न-भिन्न होते हैं। उसी प्रकार कर्म बंधते समय आत्मा कम या ज्यादा कर्मों के समुह को आत्मा के साथ जोडती है वह प्रदेश बंध है। कोई भी कर्म इन चार प्रकार से बंधता है।

२. जैन कुल में जन्म लेने से हम श्रावक तो कहलाते है, जो श्रावक परमात्मा के बताए मार्ग पर चलता हो, समकितधारी हो, पूर्वभवो में बांधे हुए विविध प्रकार के पापों को कम कैसे करना, सम्यकत्व, व्रत पच्चक्खाण नियमित रूप से करता हो, नवतत्वादि पर श्रध्दा रखे सिध्धतादि का श्रवण करे, आत्मस्वरूप का चिंतन करे, सुपात्र में धन वापरे साधु-साध्वियों की सेवा करके पुण्य प्राप्त करे, हरकाम जयणापूर्वक करे, अपने धर्म और परमात्मा पर अटूट श्रध्दा रखे जयणा यह श्रावक जीवन की माता है। श्रावक के चार प्रकार है। नाम, स्थापना, द्रव्य, भाव श्रावक।

३. विरति यदि महल है तो सम्यगदर्शन उसकी नींव है। विरति यह मोती की माला है तो सम्यगदर्शन यह धागा है। विरति यह रथ है तो सम्यगदर्शन उसका सारथि है, इसलिए श्रावक जीवन को प्रकाशमान करते व्रतो के स्विकार के से पहले सम्यगदर्शन का स्विकार अत्यन्त आवश्यक है। इसलिए यहाँ सर्व प्रथम सम्यग दर्शन के स्वरूप की विचारणा करने में आयी है। समकित, सम्यगदर्शन, सम्यगदृष्टि यह सब पर्यायवाची शब्द है सभी का अर्थ समान है। सम्यगदर्शन याने सुदेव, सुगरु, सुधर्म में अटूट, सच्ची श्रध्दा। भगवान ने धर्म का मूल सम्यगदर्शन ही बताया है। इसलिए सभी धर्मकृत्य सम्यकत्व द्वारा आत्मशुध्दि किये बिना एक भी धर्मकृत्य शोभा नही देते.

४. तिच्छालोक, मर्त्यलोक, मध्यलोक आदि अनेक नामों से पहचाना जाता है। तिच्छालोक में असंख्याता द्विप समुद्र आये हुए है। तिच्छालोक के मध्यभाग में एक लाख योजन प्रमाणवाला जंबुद्विप है। उसके आजुबाजु वलयाकार लवण समुद्र है। उसके वर्तुलाकार धातकिखंडद्विप है। उसके चारो ओर वलयाकार कालोदधि समुद्र है। उसके चारो ओर पुष्करावरद्विप और पुष्करावर समुद्र है। इस तरह क्रमशः असंख्य द्विप समुद्र है। और वे पुर्व से दुगुने विस्तार वाले है।

५. श्री वज्रपंजर स्तोत्र देह रक्षा और आत्म रक्षा के लिए प्रचलित स्तोत्र है। सदा सर्वदा सर्वत्र सहायक अद्भूत नवकार महामंत्र के नवपदों के साथ अपने देह की और आत्म की रक्षा जोडने में आई है। सभी पूजनों और विशीष्ट साधनाओं में यह स्तोत्र बोलकर विवीध मुद्राओं द्वारा वज्र के पंजरे की कल्पना की गई है। इसे क्षुद्र, उपद्रवो को नाश करनेवाली महाप्रभावशालि रक्षा कही गई है। इन पंच परमेष्ठि से उत्पन्न हुई रक्षा जो करता है, उसे भय, आधी, व्याधि नही आति। ऐसी रक्षा करके किगई साधना निर्विघ्न बनती है और शीघ्र सफलता देती है।